बर्फ में छोटा सा घर

एमिलीयन स्टनोव

चित्र: बोरिस्लाव स्टोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

शरद ऋतु साथ-साथ बारिश आई. तेज़ ठंडी हवा चलने लगी. खरगोश ठंड में बाहर ठिठुरते हुए थक गया. वह एक घर के अंदर रहना चाहता था. इसलिए वह किसी आश्रय की तलाश में जंगल में घूमने लगा.

वह एक पुराने ओक के पेड़ के पास पहुंचा और उसने छाल पर दस्तक दी. उसने दुबारा दस्तक दी. उसने पूछा:

"क्या कोई घर पर है? मैं एक घर की तलाश में हूँ!"

एक छोटा सा दरवाज़ा खुला और एक गिलहरी का छोटा सा सिर दिखा. गिलहरी ने थोड़ा सोचा और वो बोली:

"तुम अपने लिए ओक के पेड़ में एक घर बनाओ. तुम मेरे पड़ोसी बनोगे. फिर हम दोस्तों की तरह एक-साथ रहेंगे!'

खरगोश ने उसकी सलाह मानी. उसने छाल को अपने पंजों से खरोंचा, और पेड़ को अपने दांतों से कुतरा, और ओक के पेड़ में अपने लिए घर बनाने के लिए एक छेद खोदा.

अचानक, एक नीलकंठ पक्षी उसके पास में उतरा, उसने खरगोश को देखा और वो ज़ोर से चिल्लाया. उससे सौ मैगपाई इकट्ठी हुईं. उन्होंने खरगोश पर हमला किया और उसे ओक के पेड़ से दूर भगा दिया.

खरगोश उदास होकर जंगल का चक्कर लगाने लगा. उसे इस बात का एहसास हुआ कि पेड़ पर रहना ठीक नहीं होगा. उसे कहीं और शरण लेनी होगी और ऐसी कोई छिपी हुई जगह ढूंढनी होगी, जहां कोई शत्रु जानवर न हो. वह चलता रहा और चलता रहा, और कुछ देर बाद उसने खुद को एक छोटे से घर के सामने पाया. उसने दरवाज़ा खटखटाया. एक बार नहीं उसने दो बार खटखटाया. उसने पूछा:

"क्या कोई घर में है? मैं एक घर की तलाश में हूँ!"

एक साही बाहर आया. उसने खरगोश को अपने घर के चारों ओर देखने के लिए आमंत्रित किया.

घर अंदर से गर्म और सुखद था. न बारिश थी, न हवा. वहां कोई गहरी नींद सो सकता है. वह घर अच्छा और आरामदायक था: वहां नरम गलीचे, कालीन और गद्दे थे.

साही ने खरगोश को खाने के लिए कुछ दिया. उसने खरगोश को सलाह दी:

"तुम मेरे साथ रहो. हम शांति से भाइयों की तरह रहेंगे!"

खरगोश साही के साथ रहा. वह एक दिन, दो दिन, तीन दिन उसके साथ रहा. फिर चौथे दिन एक लोमड़ी आई. वह दरवाज़ा तोड़कर, दीवार तोड़कर अंदर घुस गई...

साही एक गेंद बनकर लुढ़क गया और उसने अपने शरीर को कांटों से ढक लिया. लोमड़ी को देख खरगोश तीर की तरह भाग गया...

वह जंगल में चारों ओर कूदा. उसने सोचा: "साही जैसा घर मेरे लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं होगा. मुझे एक मजबूत घर तलाश करना चाहिए. एक गुप्त स्थान पर, जहां कोई शत्रु या जानवर न हो."

फिर उसे अपने सामने एक गुफा अँधेरी दिखाई दी.

उसने चट्टान पर दस्तक दी. एक बार नहीं दो बार दस्तक दी. उसने पूछा:

"क्या कोई घर पर है? मैं एक घर की तलाश में हूँ!"

भीतर से आवाज आई:

"अंदर आओ. मेरे मेहमान बनो!"

उल्लू ने अपनी आँख झपकी. उसने खरगोश की बात बुद्धिमानी से सुनी और फिर उत्तर दिया:

"तुम मेरे साथ यहाँ रहो. मैं सारा दिन यहीं रहता हूँ!"

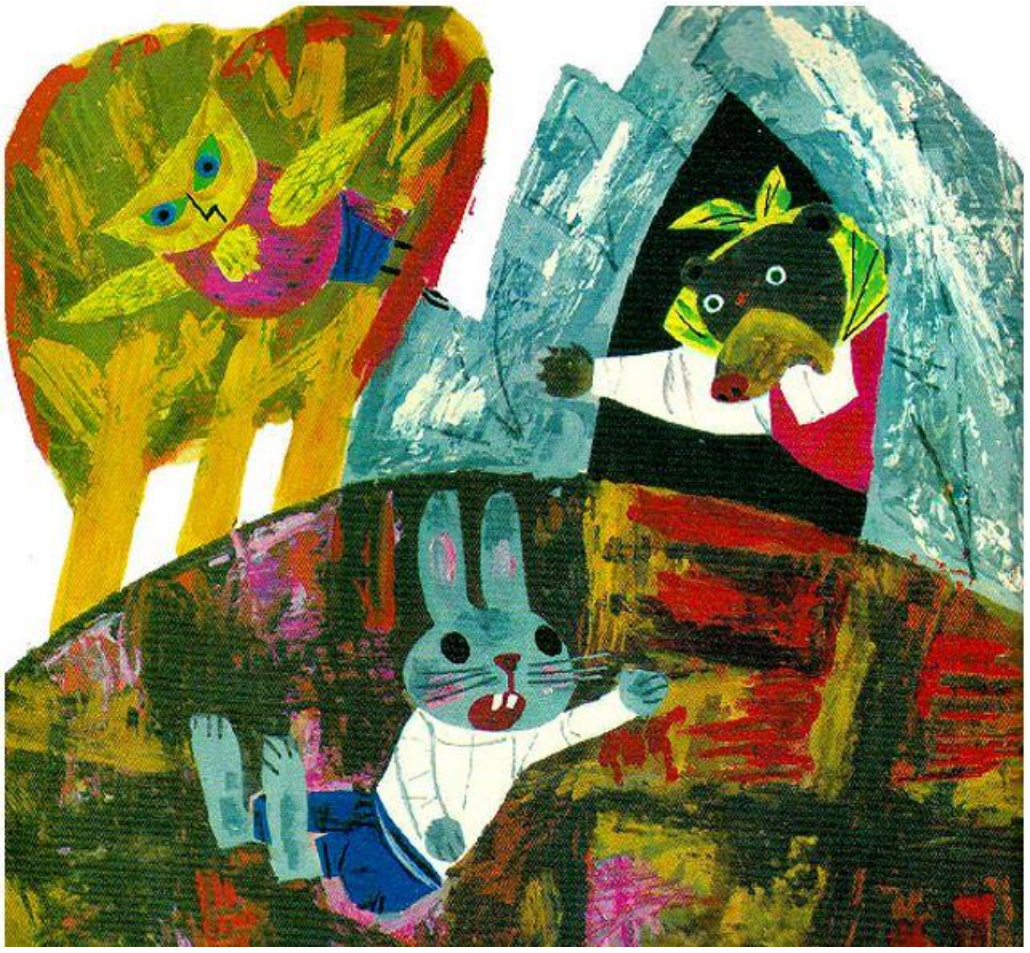

खरगोश गुफा में रहा. वह एक दिन, दो दिन नहीं, तीन दिन वहां रहा. फिर चौथे दिन एक भालू आया. वह ज़ोर से दहाड़ा, उसने अपने डरावने पंजे लहराये, अपना सिर हिलाया. उसने खरगोश को भगाया और खुद गुफा में जाकर सो गया...

खरगोश को एहसास हुआ कि वह गुफा में नहीं रह सकता था. अब उसे खुद अपना एक घर बनाना होगा. एक गुप्त स्थान पर, जहाँ कोई शत्रु जानवर नहीं आ सके. खरगोश चलता गया और चलता गया. पूरी रात उस पर बारिश पड़ती रही. भोर के समय वो एक घाटी में पहुंचा. वहां उसने किनारे पर एक मजबूत बना मकान हुआ देखा.

उसने दीवार पर दस्तक दी. एक बार नहीं दो बार. उसने पूछा:

"क्या कोई घर पर है? मैं एक घर की तलाश में हूँ!“

एक बिज्जू बाहर आया. उसने खरगोश की बात सुनी. उसने गर्दन खुजलाई, फिर कहा:

"अंदर मत आओ! गंदगी मत लाओ! मेरी सलाह सुनो. वहां नदी के किनारे पास अपना घर बना लो. खोदो, फिर नींव रखो. कुछ खम्बे लगाओ और फिर दीवारें बनाओ!'

खरगोश ने बिज्जू की सलाह का पालन किया. वह काम पर लग गया. उसने एक छोटा सा कमरा बनाया और उसमें एक खिड़की बनाई. उसने एक चिमनी खड़ी की और छत पर प्लास्टर किया. उसने मेज के रूप में बीच में एक पुराना मशरूम रखा और कुछ कुर्सियों की व्यवस्था की, जिससे उसका घर आरामदायक बने. मकड़ी ने उसके घर में एक छोटा पर्दा बुन दिया. जंगली चूहे ने उसके लिए एक कालीन बनाया. फिर कठफोड़वे ने कपड़े के क्लिप का खूंटा बनाया और दरवाजे में ताला लगा दिया.

खरगोश ख़ुशी से अपने खुद के घर में रहने लगा. वह एक सप्ताह, दो, तीन सप्ताह वहां रहा. लेकिन चौथे सप्ताह में एक बड़ा दुर्भाग्य हुआ. एक बूढ़े बिलौटे डाकू ने उसके घर में चोरी की. उसने खरगोश के बिस्तर पर हमला किया. उसने खरगोश की नींद तोड़ी और उसका कान भी फाड़ दिया.

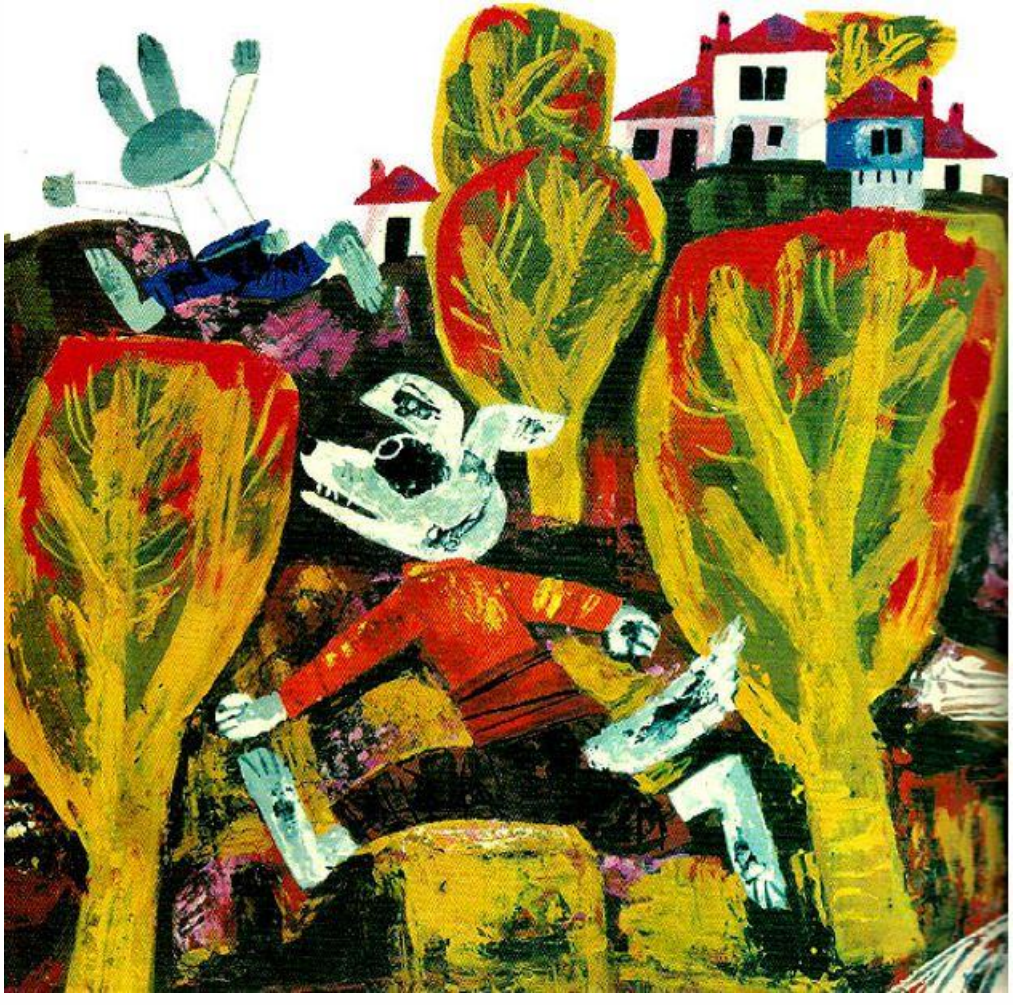

खरगोश वहां से भाग गया, लेकिन बिचारा बिना घर के रहा. वह वापस जंगल की ओर भागा. उसने सोचा और तर्क दिया: "यह अच्छी बात है कि बिलौटे ने प्रवेश किया और लोमड़ी ने नहीं... मुझे एक ऐसे गुप्त स्थान की तलाश करनी होगी, जहां कोई जानवर न हो, जहाँ पर कोई दुश्मन न हो."

अचानक उसकी नज़र एक छोटे से गाँव पर पड़ी.

खरगोश बारिश से बचने के लिए एक बाड़ में छिप गया. फिर उसने बाड़ के पीछे एक झोपड़ी देखी – अच्छी और मजबूत. उसने दरवाज़ा खटखटाया. एक बार नहीं उसने दो बार दरवाज़ा खटखटाया. उसने पूछा:

"क्या कोई घर में है?"

एक कुत्ता गुर्राया और भौंका. उसने खरगोश का पीछा किया, पहाड़ियों और घाटियों पर वो उसके पीछे दौड़ा. आख़िरकार कुत्ता भौंकते-भौंकते थक गया. फिर कुत्ता, खरगोश को अकेला छोड़कर गांव वापस आ गया.

जाड़ा आया. बर्फ गिरने लगी. बाहर सब कुछ सफेद हो गया. खरगोश बेघर रहा. वह खेत में एक झाड़ी के नीचे लेट गया. ठिठुरते हुए, उसने सोचा: "मैं कहाँ जाऊँ? हर जगह तो जानवर और दुश्मन हैं."

बिल्कुल स्पष्ट था की अब खरगोश मरने वाला था! खरगोश थोड़ा रोया, फिर कुछ और रोया, फिर वो झाड़ी के नीचे सो गया. वह बहुत थक गया था.

रात के दौरान लगातार बर्फ गिरती रही. बर्फ से जंगल और खेत ढंक गये. बर्फ हर जगह गिरी और उसने झाड़ी को भी दफना दिया. खरगोश जाग गया. अब उसे अपने चारों ओर एक छोटा सा सफेद घर दिखा! वह अंदर लेटा हुआ था. घर की सफेद दीवारें और सफेद छत थी जिसे किसी ने छुआ तक नहीं था.

वहाँ कोई मेज़, कुर्सी या स्टोव नहीं था. वहां दरवाज़ा भी नहीं था. लेकिन अंदर गर्मी थी, कोई हवा का झोंका नहीं था.

खरगोश खुश हुआ. वह काम पर लग गया. उसने बर्फ के नीचे एक दरवाजा बनाया. उसने छत में एक गड्ढा खोदा. उसने बर्फ की खिड़कियाँ ठीक कीं. वह कुछ भी नहीं भूला. फिर उसने अपने खुद के घर को आरामदेह बना लिया. रात को वह भोजन की तलाश में इधर-उधर भटकता, लेकिन सुबह वह घर वापिस आ जाता. वो अपने पैरों के निशान छिपा देता, ताकि किसी को उसके घर का पता न चले.

इसलिए वह वसंत तक उसी गुप्त स्थान पर रहा, जहां कोई जानवर नहीं था, जहाँ उसका कोई दुश्मन नहीं था...